9

परमेश्वर का मन्दिर

''क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेवर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?'' (1 कुरिन्थियों 3:16)।

परमेश्वर के बिना मनुष्य के खालीपन से देखते हुए, ऑगस्टिन ने लिखा था, ''हे परमेश्वर हमारे मन कितने बेचैन हैं, जब तक हम तुझ में चैन नहीं पाते।'' यह मानना तर्कसंगत है कि परमेश्वर मनुष्य की संगति के लिए अपनी बड़ी अभिलाषा से देखते हुए कहता है, ''हे मनुष्य, मेरा मन तेरे लिए तड़पता है, जब तक तू मुझ में चैन न पाए। मैं तुझ से प्रेम करता हूं, और तेरे उद्धार और तेरी संगति से प्रसन्न होता हूं।''

वास्तव में क्या हम विश्वास कर सकते हैं कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर मनुष्य से संगति रखना चाहता है? यहोवा परमेश्वर के मन में यदि यह इच्छा न होती तो वह इस सृष्टि, आकाश, पृथ्वी और मनुष्य की रचना ही क्यों करता? कौन मान सकता है कि सब कुछ जानने वाला और सबसे बुद्धिमान परमेश्वर जिसने सब कुछ बनाया, मनुष्य को एक खिलौना अर्थात अपने मन को बहलाने के लिए खेलने की वस्तु बनाता, जैसा कि हास्यास्पद, बच्चों जैसी देवी देवताओं की कहानियों पर विश्वास किया जाता था? संसार की बनावट और मनुष्य की आत्मिक शक्ति मिलकर बहस करते हैं कि आकाश और पृथ्वी का परमेश्वर हमारी संगति चाहता और उससे आनन्दित होता है।

तर्क से हमारा निष्कर्ष पवित्र शास्त्र की ही पुष्टि करता है। परमेश्वर ने अपने लोगों से कहा है, ''मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उनका परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे'' (2 कुरिन्थियों 6:16)। जिन्हें उसने छुड़ाना तथा अपनी संगति में लाना था उनके लिए उसने कहा है, ''[मैं] तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होंगे'' (2 कुरिन्थियों 6:.18)।

अपने लोगों में परमेश्वर के रहने की इस सच्चाई को कलीसिया में मेल के रूप देखा जाना चाहिए। नई वाचा के अधीन, कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर अर्थात आत्मिक घर है जिसमें प्रत्येक मसीही उस घर का एक जीवित पत्थर है (1 पतरस 2:5) और पूरी इमारत मिलकर आत्मा में परमेश्वर के रहने का स्थान बन जाती है (इफिसियों 2:21, 22)।

कलीसिया को परमेश्वर के मन्दिर के रूप में पहचानने से कलीसिया के स्वभाव का एक और पहलू सामने आता है। ''मन्दिर'' शब्द जिसका पुराने नियम में विशेष महत्व है, हमें परमेश्वर के साथ कलीसिया के सम्बन्ध और परमेश्वर के साथ इसके चलने की और गहराई से समझ देता है।

इसलिए, मसीह की कलीसिया को और अच्छी तरह से समझने के लिए, आइए हम पूछते हैं, कि ''कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर कैसे है?''

मिलने का स्थान

पहली बात, कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर इस अर्थ में है कि यह परमेश्वर और लोगों के मिलने का स्थान है। चर्च अर्थात कलीसिया वह स्थान है जहां परमेश्वर और मनुष्य संगति के लिए मिलते हैं।

इस्राएलियों के सीनै पर्वत पर पहुंचने से परमेश्वर ने उन्हें मूसा के द्वारा अपनी व्यवस्था और आराधना करने का स्थान दिया था। आराधना के स्थान को ''मिलाप का तम्बू'' कहा जाता था, क्योंकि यहीं पर परमेश्वर मूसा, अपने याजकों तथा अपने लोगों से मिलता था (निर्गमन 29:42)। वेदी के द्वार पर नित्य होम बलि हुआ करती थी, क्योंकि परमेश्वर ने कहा था, ''यह वह स्थान है जिसमें मैं तुम लोगों से इसलिए मिला करूंगा, कि तुझ से बातें करूं। और मैं इस्राएलियों से वहीं मिला करूंगा और वह तम्बू मेरे तेज से पवित्र किया जाएगा'' (निर्गमन 29:42, 43)। परमेश्वर ने उस स्थान की रूपरेखा बनाई जहां वह और उसके लोग इकट्ठे होकर मिल सकें।

अब, अन्तिम वसीयत और मसीह के नियम अर्थात नई वाचा के अधीन परमेश्वर ने अपने लोगों से मिलने के स्थान के रूप में कलीसिया को चुना है। जब हम मसीह के सुसमाचार को मानते हैं, तो यीशु के लहू में हमारे पाप धो दिए जाते हैं और हमें परमेश्वर के परिवार में गोद ले लिया जाता है (इफिसियों 1:5; गलतियों 4:6)। मसीह में प्रवेश कर चुके लोग न केवल परमेश्वर को जान गए हैं, बल्कि वे परमेश्वर के लोग होने के लिए और परमेश्वर की मीरास पाने के लिए आए हैं (इफिसियों 1:14; गलतियों 4:9)। हम परमेश्वर के पुत्र हैं, और पुत्र होने के कारण हम मसीह द्वारा अनन्त जीवन के वारिस बन गए हैं (रोमियों 8:17; गलतियों 4:7)। हम कलीसिया अर्थात परमेश्वर के परिवार में प्रवेश कर गए हैं, जहां हम मित्रों की तरह परमेश्वर के साथ और उसकी संगति में चल सकते हैं।

वर्षों पहले कलीसिया को मार्शल कीबल के प्रचार से आशीष मिली थी। आत्मिक सच्चाइयों की व्याख्या करने का उनका ढंग स्पष्ट था, जिससे उनके सुनने वालों का ध्यान आकर्षित होता था और वे उन सच्चाइयों को मान लेते थे। एक रात बपतिस्मे के बारे में प्रचार करते हुए, उन्होंने 1 पतरस 3:21 को उद्धृत किया, ''और उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)।'' फिर भाई कीबल ने कहा, ''बपतिस्मे के समय तीन लोग होते हैं। पहला,

बपतिस्मा लेने वाला अर्थात पापी, बपतिस्मा लेने के लिए उपस्थित होता है। दूसरा, पापी को बपतिस्मा देने वाला अर्थात प्रचारक बपतिस्मा देने के लिए उपस्थित होता है। तीसरा, परमेश्वर वहां होता है। प्रचारक के पापी को बपतिस्मा देने के समय परमेश्वर और पापी का पानी में मिलन होता है।''

मार्शल कीबल के उदाहरण से एक बताने योग्य बात उजागर होती है। परमेश्वर ने उद्धार के लिए अपनी योजना के भाग के रूप में बपतिस्मे की आज्ञा दी है। मसीह में आने के लिए हम इस अन्तिम आज्ञा को मानते हैं। विश्वास करने वाले, पश्चात्तापी पापियों को मसीह में बपतिस्मा देने के समय, परमेश्वर और मसीह के साथ एक किया जाता है (रोमियों 6:3; गलतियों 4:6), जिससे वे पानी में उद्धार करने वाले सम्बन्ध के लिए इकट्ठे होते हैं।

सुसमाचार का अद्‌भुत समाचार यह है कि परमेश्वर ने वह स्थान उपलब्ध करवा दिया है जहां वह मनुष्य के साथ पवित्र संगति में मिलता है, और वह स्थान कलीसिया है। संक्षेप में, इस मसीही युग में परमेश्वर ने अपने वचन में मनुष्य से कह दिया है, ''मैं तुझ से अपने मन्दिर अर्थात मसीह की देह अर्थात कलीसिया में मिलूंगा। मैंने तेरे उद्धार का मार्ग बता दिया है ताकि तू आत्मिक जीवन पाने और पवित्र संगति के लिए मुझ से मिल सके।''

निवास स्थान

दूसरा, कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर है क्योंकि यह परमेश्वर का निवास स्थान है। परमेश्वर हमसे न केवल अपने मन्दिर में ही मिलता है, बल्कि वह इसमें हमारे साथ रहता भी है। कलीसिया द्वारा, परमेश्वर अपने लोगों में वास करता है।

मूसा की व्यवस्था के अधीन वेदी के विषय में, परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा था, ''और मैं इस्राएलियों के मध्य निवास करूंगा, और उनका परमेश्वर ठहरूंगा। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूं, जो उनको मिस्र देश से इसलिए निकाल ले आया, कि उनके मध्य निवास करूं; मैं ही उनका परमेश्वर यहोवा हूं'' (निर्गमन 29:45, 46)। वेदी और जो कुछ इसमें था वह सब इस्राएलियों को उनमें परमेश्वर की उपस्थिति का स्मरण कराता था। इस्राएलियों से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा करते हुए, उसने वेदी को अपने तेज से भर दिया था (निर्गमन 40:34)। परमेश्वर की उपस्थिति दर्शाने के लिए दिन में वेदी के परम पवित्र स्थान पर बादल का एक खम्भा रहता था और रात को आग का। दिन के समय जब इस्राएली आगे बढ़ते थे, तो वह खम्भा परमेश्वर द्वारा उनकी अगुआई को दिखाने के लिए उनके आगे चलता था, जबकि रात के समय परमेश्वर की अगुआई दिखाने के लिए आग का खम्भा चलता था (निर्गमन 40:36-38; गिनती 9:15-23)। साक्षी के तम्बू के द्वारा, परमेश्वर अपने लोगों में रहकर और उनकी अगुआई करके उनमें वास करता था।

नये नियम में, अपने आत्मा के द्वारा कलीसिया परमेश्वर का निवास है। पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया के नाम पत्री में लिखा था, ''और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर

का क्या सम्बन्ध ? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे'' (2 कुरिन्थियों 6:16)। इफिसियों 2 में पौलुस ने अन्यजातियों से मसीह बनने वालों के लिए कहा था:

> इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। और प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो (इफिसियों 2:19-22)।

परमेश्वर मसीही लोगों में दो तरह से रहता है: पहला, उसका आत्मा प्रत्येक मसीही के मन को परमेश्वर के मन्दिर के रूप में इस्तेमाल करते हुए उसमें वास करता है। पौलुस ने आत्मा के वास की बात को मसीही लोगों के लिए अपनी देहों को अनैतिकता से शुद्ध रखने के रूप में इस्तेमाल किया: ''व्यभिचार से बचे रहो: ... क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो ?'' (1 कुरिन्थियों 6:18, 19)।

दूसरा, परमेश्वर का आत्मा मसीही लोगों की संयुक्त देह अर्थात कलीसिया में रहता है। कुरिन्थुस की कलीसिया के सम्बन्ध में पौलुस ने लिखा, ''क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है'' (1 कुरिन्थियों 3:16)। इस आयत में ''तुम'' के लिए पौलुस ने जिस यूनानी शब्द का इस्तेमाल किया वह बहुवचन है। स्पष्टत: आत्मा के मन में केवल एक मसीही नहीं बल्कि विश्वासियों की मण्डली अर्थात कलीसिया थी।

हम सब प्रश्न करते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों में कैसे रहता है। परन्तु, इस सम्बन्ध में एक सत्य से हम संतुष्ट हो सकते हैं कि उसका रहना अपने वचन को पूरा करने के द्वारा होता है, क्योंकि परमेश्वर अपने वचन द्वारा काम करता है (इफिसियों 6:17)। पौलुस ने, इन आयतों में परमेश्वर के वास करने के बारे में विस्तार से नहीं बताया बल्कि उसने केवल इसकी पुष्टि की है। इन आयतों में जो सच्चाई मसीही लोगों को ढूंढ़नी चाहिए वह यह है कि परमेश्वर हर मसीही में तथा कलीसिया में रहता है। वह हमारे बीच अर्थात हम में रहता है।

अस्सी वर्ष की आयु में, मूसा होरेब नामक स्थान पर जलती हुई झाड़ी में परमेश्वर से मिला (निर्गमन 3:1)। परमेश्वर ने उससे कहा कि, ''मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूं कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिसर से निकाल ले आए'' (निर्गमन 3:10)। मूसा को विश्वास नहीं हुआ कि परमेश्वर के लिए मिसर में वही जाएगा, परन्तु उसके बहानों का परमेश्वर द्वारा उत्तर देने के बाद, मूसा दबे हुए इस्राएलियों को छुड़ाने का आदेश पाकर जलती झाड़ी को छोड़कर मिसर की ओर चल दिया। शीघ्र ही मूसा ने परमेश्वर *से मिलने* और परमेश्वर

के साथ चलने में अन्तर देखा। होरेब पर वह परमेश्वर से भी मिला था और वहां उसने आज्ञा पाई थी। होरेब से निकलकर, वह परमेश्वर के साथ चला था। प्रभु ने मूसा से कहा था, ''निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा, ...'' (निर्गमन 3:12)। परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और सब महामारियों में, लाल समुद्र में से गुज़रते समय, और सीनै पर्वत तक इस्राएलियों की अगुआई की।

कलीसिया में हम परमेश्वर के मन्दिर के रूप में न केवल मसीह में परमेश्वर से मिले हैं, बल्कि परमेश्वर भी हम में वास करता है और लगातार हमारे साथ चलता है। मसीही लोगों को कितना आश्वस्त और दृढ़ होना चाहिए! विश्वास से मसीही जीवन बिताते हुए, हम हर रोज परमेश्वर की संगति में चलते हैं। किसी भी परीक्षा या कठिनाई का सामना करते समय उसकी संगति तथा सामर्थ हमारे साथ होती है।

यूहन्ना ने लिखा है, ''यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं: और सत्य पर नहीं चलते। पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है'' (1 यूहन्ना 1:6, 7)।

आराधना का एक स्थान

तीसरा, परमेश्वर के मन्दिर के रूप में, कलीसिया आराधना करने का स्थान है। मसीही व्यक्ति एक चलता हुआ कैथिड्रल है।

पतरस कहता है, ''तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं'' (1 पतरस 2:5)। वह यह भी कहता है, ''पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो'' (1 पतरस 2:9)। परमेश्वर के याजकों के रूप में, आज मसीही लोग किसी भी समय और किसी भी स्थान पर यीशु के द्वारा परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं। यीशु के कारण, इब्रानियों का लेखक हमसे परमेश्वर तक साहसी होकर पहुंचने का आग्रह करता है: ''इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे'' (इब्रानियों 4:16)।

याकूब के कुएं पर सामरी स्त्री को यीशु ने बताया था कि आराधना अब किसी विशेष स्थान, ठहराए हुए पर्वत या भवन में नहीं होगी। उसने कहा था, ''हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में''(यूहन्ना 4:21)। वह बता रहा था कि भविष्य में, आराधना किसी विशेष स्थान पर करने से नहीं, बल्कि आत्मा और सच्चाई से करने पर स्वीकार्य होगी। इस सामरी स्त्री को उसने यह भी बताया था, ''परन्तु वह समय आ रहा है, वरन अब भी है जिसमें सच्चे

भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधना करने वालों को ढूंढ़ता है'' (यूहन्ना 4:23; ROV)। यीशु यहां मसीही युग की बात कर रहा था जिसमें मसीही लोगों ने परमेश्वर के याजकों के रूप में उसके द्वारा कहीं भी और किसी भी स्थान पर परमेश्वर की आराधना करनी थी।

परमेश्वर तक पूरी पहुंच पाकर मसीही लोगों को आराधना करने के सौभाग्य की आशीष (यूहन्ना 4:23), प्रायश्चित का प्रबन्ध (1 यूहन्ना 2:1) और ईश्वरीय सामर्थ मिलती है (इफिसियों 1:19)। इसलिए, परमेश्वर के याजकों के रूप में जिन्हें भरपूर मात्रा में सम्पन्न किया गया है, ''हम उसके द्वारा स्तुति रूपी बलिदान अर्थात उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें'' (इब्रानियों 13:15)।

सारांश

कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर है! कितनी चुनौतीपूर्ण सच्चाई है यह! परमेश्वर के मन्दिर के रूप में, कलीसिया परमेश्वर के मिलने, परमेश्वर के रहने और हमारे लिए परमेश्वर की आराधना करने का स्थान है।

क्या आप मसीह की कलीसिया के सदस्य हैं? यदि आप मसीह से बाहर हैं तो उन सब बातों पर विचार कीजिए जिनसे आप वंचित हैं। उसके बाहर, आप मनुष्य से उसके मिलने के स्थान से बाहर हैं। आप चाहे कितने भी धार्मिक क्यों न हों, वास्तव में आप परमेश्वर से मिलने अर्थात उसके निकट अभी नहीं आए हैं। उससे बाहर रहकर आप परमेश्वर के साथ नहीं रह सकते हैं। जहां पर आप इस समय हैं वहां पर आप उसके साथ मिलकर नहीं चल सकते। उसके दायरे से बाहर रहकर, आप परमेश्वर को स्वीकार्य आराधना भी नहीं कर सकते। जिस स्थिति में आप इस समय हैं उसमें आप उसके नियुक्त ढंग और उसके ठहराए हुए स्थान से अर्थात मसीह के द्वारा आराधना नहीं कर सकते। यदि आप मसीह की देह से बाहर हैं, तो उसकी देह में प्रवेश करने का फैसला कीजिए (रोमियों 6:3) ताकि आप जीवन में और अनन्तकाल में परमेश्वर के साथ चल सकें।

आपके लिए परमेश्वर की उपस्थिति और प्रबन्धों का आनन्द लेने के लिए, परमेश्वर के उद्देश्य के स्थान पर रहना आवश्यक है। परमेश्वर का उद्देश्य था कि मूसा मिसर में जाकर परमेश्वर के लोगों को छुड़ाए। यदि मूसा विपरीत दिशा में चला जाता तो क्या होता? तो वह केवल वहां जाता जहां परमेश्वर की उपस्थिति, प्रबन्ध और शक्ति न होती। यह इसलिए सच है क्योंकि ऐसा करके वह परमेश्वर के उद्देश्यों से बाहर चला गया होता। परमेश्वर ने योना को नीनवे जाने के लिए कहा था, पर योना तर्शीश को चला गया। बाइबल कहती है, ''परन्तु योना यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को भाग जाने के लिए उठा और यापो नगर को जाकर तर्शीश जाने वाला एक जहाज पाया; और भाड़ा देकर उस पर चढ़ गया कि उनके साथ होकर *यहोवा के सम्मुख से* तर्शीश को चला जाए'' (योना 1:3)। योना परमेश्वर के साथ नीनवे को तो जा सकता था, परन्तु तर्शीश नगर को नहीं। क्योंकि परमेश्वर के उद्देश्य

का स्थान नीनवे था, तर्शीश नहीं।

कलीसिया अर्थात परमेश्वर के मन्दिर में आने वाला कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के उद्देश्यों में और उस संगति में आता है जिसे परमेश्वर ने कहा है, ''[मैं] तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होंगे'' (2 कुरिन्थियों 6:18)। जब कोई व्यक्ति मसीही बनता है, तो मिट्टी का उसका घर अर्थात उसकी देह परमेश्वर का तेजस्वी मन्दिर बन जाती है!

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. ऑगस्टिन ने कहा था, ''हे परमेश्वर हमारे मन कितने बेचैन हैं, जब तक हम तुझ में चैन नहीं पाते।'' इस कथन का क्या अर्थ है?
2. हमारे पास इस बात का क्या प्रमाण है कि परमेश्वर हमारे साथ संगति करना चाहता है? इस बात को सत्य मानने के कारण बताएं।
3. पवित्र शास्त्र से वे आयतें लिखें जो सिखाती हैं कि परमेश्वर हमारे साथ संगति चाहता है।
4. कलीसिया परमेश्वर और मनुष्य के ''मिलने का स्थान'' कैसे है?
5. पुराने नियम के काल में परमेश्वर मनुष्य से कैसे संगति रखता था?
6. चर्चा करें कि मसीही युग में कलीसिया परमेश्वर के ''रहने का स्थान'' कैसे है?
7. साक्षी का तम्बू इस्राएलियों को परमेश्वर के निवास स्थान का स्मरण कैसे कराता था?
8. परमेश्वर किन दो प्रकार से मसीही लोगों में रहता है (1 कुरिन्थियों 6:18, 19; 3:16)।
9. मसीह की कलीसिया ''आराधना का स्थान'' कैसे है?
10. क्या सच्ची आराधना के लिए स्थान का महत्व है?
11. क्योंकि कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर है, इसलिए पुराने नियम में पाई जाने वाली आशिषों के विपरीत आज मिलने वाली आशीष कौन सी है?
12. आज हम परमेश्वर के मन्दिर में कैसे प्रवेश करते हैं?